

**Mr. B G Munisamy\***

Former Driver

22.6.1998

*I joined NTI in November 1961. I was given charge of Bedford van MYE 257 and sent to Anantapur camp. Sometime in December 1961, the Director, Dr Bordia came along with Dr O'Rourke and Dr Piot, in the staff car MYE 16. Its driver was Mr Chandran. Seeing me the Director called me:*

*"Munisamy, why are you here?"*

*"I am driving Bedford van sir and taking trainees for field work."*

*"You give charge to Chandran and takeover the Chevrolet immediately and come with us."*

*I went back with them and from then on, I drove the staff car. I had to pickup all the WHO officers and Director in the morning and drop them back to their homes in the evening after work. In the office, I was asked to assist in the repair of vehicles. I was a good mechanic. Perhaps this was the reason why I was brought to the headquarters from the field. The NTI workshop was under Mr Socrates, the transport supervisor. We had a lot of repair work then because there were more than forty imported vehicles. These were being used constantly for field work. In fieldwork, there were always some emergency because of vehicle breakdown. The moment our section got information, Mr Socrates would ask us to attend to it. We mechanics would pickup the required spare parts and material and leave.*

*But accidents happen. A few months later, I was driving Bedford van MYE 5569 to Magadi camp when suddenly the right front tyre burst and the vehicle overturned. Somehow, with help, I turned the vehicle upright and replaced the tyre. There were scratches on the side but fortunately nothing happened to me and the vehicle was in running condition. I brought back the vehicle and informed Mr Socrates about it. The next morning I was called by the Director. I went to him shivering thinking that I would get fired. But, he was not angry. He asked me, "Munisamy, you are a careful driver. How did this accident happen? It is a new vehicle. Tell me honestly what happened." I narrated what had happened. He listened calmly and was not angry with me at all. He got up and said "show me". We went to the workshop and I explained what had happened. He inspected the vehicle and got it repaired the same day. Not a word was said to me. When he left for Delhi in 1962 as Adviser, I wept. He was our first Director.*

*Our NTI became a very good institute and became world famous. Where did this fame come from? Because we all worked for it. Even the WHO officers praised us. I want to tell you that I was also a proud member of that group of workers.*

*\* Passed away in October 1999*

## श्री. बी.जी.मुनिस्वामी \*

भूतपूर्व चालक

२२.२.१९९८

मैंने राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान में नवम्बर १९६१ में प्रवेश किया । मुझे बेडफोर्ड वैन एम.वाई.ई. २५७ का चार्ज देकर अनन्तपुर कैम्प में भेजा गया । दिसम्बर १९६१ में निदेशक डा.बोर्डिया, डा. ओ' राउरूक और डा. पीयो के साथ स्टाफ कार एम.वाई.ई. १६ में आए जिसका चालक चन्द्रन था । मुझे देखकर निदेशक ने कहा मिस्टर मुनीस्वामी तुम यहाँ क्यों हो ? मैंने उत्तर दिया मैं बेडफोर्ड वाहन से प्रशिक्षणार्थियों को फी ल्ड कार्य के लिए लाया हूँ । उन्होंने कहा तुम चन्द्रन को गाड़ी दे दो और मेरे साथ आओ । मैं तब से स्टाफ कार चलाने लगा । विश्व स्वास्थ्य संगठन के अधिकारियों और निदेशक को घर से लाना तथा कार्य समाप्त होने पर उन्हें वापस घर पहुँचाना मेरा कार्य था । अच्छा यात्रिकी होने के कारण मुझे वाहनों की मरम्मत का कार्य भी दिया गया, और बाद में मुझे क्षेत्र से मुख्यालय पर रखा गया ।

संस्थान की वाहन कार्यशाला श्री. सोक्रेटिस के नियंत्रण में थी, जो हमारे यातायात निरीक्षक थे । उस समय मुझे ४० इम्पोर्टेड वाहनों की मरम्मत का कार्य भी करना पड़ता था । हर जगह सहयोग की भावना थी । क्षेत्र में वाहनों के खराब होने से आपात स्थिति उत्पन्न होने की सूचना मिलते ही हम कल पुर्जे लेकर मरम्मत हेतु क्षेत्र में चल देते थे ।

दुर्घटनाएँ भी होती थी । मुझे एक घटना याद है कुछ माह बाद मैं मागड़ी कैम्प हेतु बेडफोर्ड वाहन यम.वाई.ई. ५५६९ ले जा रहा था कि अचानक अगला दाहिना टायर फट गया और वाहन पलट गया । किसी तरह वाहन को सीधा करके टायर बदला । मेरे शरीर में कुछ खरोचों के अतिरिक्त सब ठीक था तथा वाहन भी चालू स्थिति में था । मैंने श्री. सोक्रेटिस को इसके बारे में बताया । अगले दिन मुझे निदेशक ने बुलाया । मैं डर के कारण काँप रहा था और सोच रहा था कि आज नौकरी से निकाला जाऊँगा । लेकिन वह नाराज नहीं थे । उन्होंने पूछा मुनिस्वामी तुम एक सावधान चालक हो, यह दुर्घटना कैसे हुयी ? यह एक नया वाहन है । मुझे ईमानदारी से बताओ कि क्या हुआ ? मैंने उन्हें सब कुछ बताया । वे कार्यशाला गए और उन्होंने उसी दिन वाहन ठीक करा दिया तथा मुझे एक शब्द भी नहीं कहा । सन् १९६२ में जब वह संस्थान छोड़कर सलाहकार बनकर दिल्ली गए तो मैं बहुत रोया था । वह हमारे पहले निदेशक थे ।

धीरे-धीरे हमारा राष्ट्रीय क्षयरोग संस्थान बहुत अच्छा संस्थान बन गया और संसार में प्रसिद्ध हो गया । यह प्रसिद्धि कहाँ से आयी ? इसका कारण हम लोगों का समर्पण भाव से किया गया कार्य है । विश्व स्वास्थ्य संगठन के अधिकारियों ने भी इसकी प्रशंसा की । मैं यह बताना चाहूँगा कि मैं भी इन कार्यकर्ताओं के समूह का एक गर्वान्वित व्यक्ति था ।

\* 1999 में निधन